Topic 44

अदादिगणीय ध्रुवकर्तानामवाची

ब्रूञ् व्यक्तायांवाचि

ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः

ब्रुवो लटस्तिबादीनां पञ्चानां णलादयः पञ्च वा स्युर्ब्रुवश्चाहादेशः। आह। आहतुः। आहुः।

आहस्थः।

झलि परे। चर्त्वम्। आत्थ। आहथुः

झल (सभी वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण तथा श, ष, स, ह) परे होने पर 'आह' के स्थान पर थकार आदेश हो जाता है। 'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा से यह आदेश 'आह' के अन्त्य हकार के ही स्थान पर होता है। उदाहरण के लिए लट् लकार के मध्यमपुरुष - एकवचन में 'ब्रू' धातु से सिप्, शप्-लुक् और सिप् के स्थान पर विकल्प से 'थल' तथा 'ब्रू' के स्थान पर 'आह' होकर 'आह थ' रूप बनता है। इस स्थिति में झल- थकार परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'आह' के हकार के स्थान पर थकार होकर 'आथ् थल' रूप बनेगा। पुनः चर्त्व और थकार- लोप होने पर 'आत्थ' रूप सिद्ध होता है। णलाभाव - पक्ष में 'ब्रवीषि' रूप बनता है।

ब्रुव ईट्।

ब्रुवः परस्य हलादेः पित ईट् स्यात्।
ब्रवीति। ब्रूतः। ब्रुवन्ति। ब्रूते। ब्रुवाते। ब्रुवते।

ब्रुवो वचिः।

आर्धधातुके। उवाच। ऊचतुः। ऊचुः।
उवचिथ, उवक्थ। ऊचे। वक्ता। वक्ष्यति।
वक्ष्यते। ब्रवीतु, ब्रूतात्। ब्रुवन्तु। ब्रूहि।
ब्रवाणि। ब्रूताम्। ब्रवै। अब्रवीत्, अब्रूत।
ब्रूयात्, ब्रुवीत। उच्यात्। वक्षीष्ट।

अस्यति-वक्ति-ख्यातिभ्योऽङ्।

एभ्यश्च्लेरङ् स्यात्।

। वच उम्।

अङि परे। अवोचत। अवोचत। अवक्ष्यत,
अवक्ष्यत।

(ग० सू०) चर्करीतं च।

चर्करीतमिति यङ्लुगन्तं, तददादौ बोध्यम्।

ऊर्णुञ् आच्छादने।

'अङ्' परे होने पर 'वच्' धातु का अवयव 'उम्' होता है। 'उम्' में मकार इत्संज्ञक है, अतः मित् होने के कारण 'मिदचोऽन्त्यात् परः' परिभाषा से यह 'वच्' के अन्त्य अच् - वकारोत्तरवर्ती अकार के आगे आता है। उदाहरण के लिए 'वच् अत' में 'वच्' के बाद 'अङ्' आया है, अतः प्रकृत सूत्र से 'वच्' को 'उम्' (उ) आगम होकर 'व उ च् अ त' रूप बनता है। इस अवस्था में गुण होकर और अट् करने पर 'अवोचत्' रूप सिद्ध होता है।